शास्त्रीय नृत्य को बना दिया लोक संस्कृति का उत्सव

पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं, यह कहावत 'कनपुरिया स्टार' विपिन निगम पर बिल्कुल फिट बैठती है। माता-पिता उन्हें डॉक्टर-इंजीनियर बनाना चाहते थे, मगर तीन बरस की उमर से ही पांव ऐसे थिरकने शुरू हुए कि डबल एमए करने के बावजूद शास्त्रीय नृत्य को ही अपना जीवन बना लिया। आज उनकी पहचान कथक नृत्य के महागुरु के रूप में होती है। विपिन का बनाया कृष्णम डांस ग्रुप अब शहर की बेटियों को शास्त्रीय एवं लोक नृत्य की नि:शुल्क शिक्षा देता है। वह उभरते कलाकारों को मंच प्रदान करते हैं, काम दिलाते हैं और शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़ाते हैं। कथक एवं भरतनाट्यम में महारत रखने वाले विपिन की लोक नृत्य में भी मजबूत पकड़ है।

कथक गुरु विपिन निगम

कथक व भरतनाट्यम में महारत रखने वाले विपिन निगम ने लोक नृत्य को भी दिए नए आयाम

परिवार बनाना चाहता था डॉक्टर-इंजीनियर

कानपुर के जवाहर नगर में जन्मे विपिन निगम के पांव तीन साल की उमर में ही थिरकने लगे थे। उनके पिता लक्ष्मी बहादुर निगम नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट कल्याणपुर में ऑफीसर थे। पिता के साथ मां शीला निगम ने हौसला दिया तो विपिन ने चार साल की उम्र में ही मंच पर कदम रख दिया। 10 साल की उम्र तक उन्होंने कई पुरस्कार जीते, लेकिन इसके बाद माता-पिता को पढ़ाई की चिंता सताने लगी। विपिन बताते हैं कि पिता उन्हें डॉक्टर या इंजीनियर बनाना चाहते थे, लेकिन उनका पढ़ाई में ज्यादा रुझान नहीं था। नृत्य लगातार साथ-साथ चलता रहा। कथक और भरतनाट्यम में भी एमए किया। 42 वर्षीय विपिन निगम इस समय शास्त्रीय नृत्य कला में पीएचडी कर रहे हैं। वर्ष 2003 में पहले मां फिर 2005 में पिता का सिर से साया उठने के बाद विपिन ने खुद को शास्त्रीय नृत्य और संगीत के क्षेत्र में समर्पित कर लिया। कथक और भरतनाट्यम के साथ तबला और लोक गायन की शिक्षा ली। विपिन लखनऊ घराने से ताल्लुक रखते हैं।

एक नहीं अनेकों मिल चुके अवार्ड

कानपुर के डांडिया किंग रह चुके विपिन निगम अनेक अवार्ड से सम्मानित हो चुके हैं। उन्हें अटल रत्न, यूपी रत्न, कानपुर गौरव, यूपी आईडल, यूथ आइडल, पर्सनॉलिटी ऑफ कानपुर, कानपुर की शान, कलाश्री नटराजन, नृत्य शिरोमणि महागुरु और कानपुर के महारथी जैसे दर्जनों अवार्ड मिल चुके हैं।

तैयार कर रहे कथक की नई पौध

कथक गुरु विपिन निगम जयपुरिया स्कूल में नृत्य विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं। उनके द्वारा प्रशिक्षित बच्चे अपना अलग ग्रुप बनाकर नृत्य के क्षेत्र में नाम कमा रहे हैं। विपिन का कहना है कि उनके कृष्णम डांस ग्रुप का उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय एवं लोक नृत्य को आगे बढ़ाना है, ताकि बच्चे भारतीय संस्कृति से जुड़े रहें और भावी पीढ़ी को भी इस ओर आकर्षित करें।

बिरजू महाराज ने दिया आशीर्वाद, सरोज खान से मिला 'महागुरु' अवार्ड

लखनऊ घराने के कथक सम्राट बृजमोहन मिश्रा उर्फ पं.बिरजू महाराज के सामने नृत्य पेश कर विपिन निगम ने खूब वाहवाही लूटी थी। अपने हुनर की बदौलत उनका आशीर्वाद पाया। वर्ष 2017 में कानपुर नगर में एक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आईं मशहूर नृत्य निर्देशक सरोज खान ने विपिन को 'महागुरु' का अवार्ड दिया था। उन्होंने विपिन के नृत्य के साथ भाव-भंगिमाओं की खूब सराहना की थी। उनकी इसी काबिलियत को देखते हुए प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी जितनी बार कानपुर आए तो उनके स्वागत के लिए विपिन निगम को बुलाया गया और उन्होंने अपने साथी कलाकारों के साथ ग्रुप डांस पेश कर अपना जलवा बिखेरा। वह खुद एक कलाकार के रूप में मंच पर प्रस्तुतियां देने के साथ ही बेहतर निर्देशक भी हैं।

प्रस्तुति: बृजेश श्रीवास्तव

कानपुर का माचिस मैन

कानपुर। आपने फोटोग्राफी, पेंटिग्स, संगीत, साहित्य का शौक सुना और देखा होगा। इसी तरह दुनिया में तमाम लोगों को तरह-तरह की चीजें संग्रह करने का शौक किसी जुनून की भांति रहता है। ऐसे ही एक शख्स हैं कानपुर में बिरहाना रोड निवासी आलोक मेहरोत्रा, जिन्हें माचिस के बॉक्स एकत्र करने के शौक के कारण लोग 'माचिस मैन' नाम से जानते हैं। आलोक मेहरोत्रा के पास 80 देशों की एक लाख से ज्यादा माचिस का अनोखा संग्रह है। उनका कलेक्शन देखकर इस बात का सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि माचिस बॉक्स इकठ्ठा करने का जुनून उन्हें किस हद तक है। अपने इस अनोखे शौक के कारण आलोक का नाम इंडिया स्टार वर्ल्ड रिकॉर्ड के साथ दो बार लिम्का बुक आफ रिकार्ड में दर्ज हो चुका है। अब उनका सपना अपने इस शौक के जरिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज कराना है। इसके लिए वह दो लाख से ज्यादा माचिस बॉक्स एकत्र करने के काम में लगे हैं।

आलोक मेहरोत्रा बताते हैं कि बचपन में खेल-खेल में शुरू हुआ शौक कब जुनून बन गया पता ही नहीं चला। बचपन में जब वह घर से बाहर निकलते थे तो सड़क पर पड़े माचिस के खाली बॉक्स उठा लेते थे। सड़क से माचिस बॉक्स उठाने के कारण घर में उन्हें मां से कई बार मार तक खानी पड़ी, लेकिन शौक कम नहीं हुआ। आलोक के पिता का कपड़े का व्यवसाय था। उनकी आढ़त पर बाहरी जिलों के व्यापारी आते और रुकते थे। इनमें से तमाम व्यापारी बीड़ी या सिगरेट पीने के लिए अपने पास माचिस रखते थे। माचिस खत्म हो जाने पर खाली बॉक्स यह लोग डस्टबिन में फेंक देते थे, जिसे वह उन पर छपी तस्वीर या ब्रांड देखकर उठा लेते थे। धीरे-धीरे व्यापारियों को उनके माचिस संग्रह का पता चला तो वह अपने शहर की अलग-अलग तरह की माचिस लाकर देने लगे। वर्ष 2011 के बाद सोशल मीडिया के इस्तेमाल से आलोक ने माचिस बॉक्स के दूसरे संग्रहकों तक पहुंच बनाई। इसके बाद एक्सचेंज का सिलसिला तेजी से चल पड़ा। उनके पास जो माचिस बॉक्स नहीं थे, वह दूसरों से मिलने लगे। इसी तरह वह दूसरे संग्रहाकों को भी सहयोग करने लगे। आलोक के संग्रह में अगर अंगुली की पोर से भी छोटी माचिस है, तो उनके पास सबसे बड़ी माचिस 1.5 फिट की है। उनके संग्रह में बोतल, सिलेंडर और शेर की आकृति वाली माचिस भी हैं, जो देखने में चौंकाती हैं। उनके संग्रह वाले माचिस बॉक्स में गणेश-लक्ष्मी, कुबेर, राधा रानी, श्रीकृष्ण, भोले शंकर, बाबा अमरनाथ, तुलसी पूजा, डांडिया रास, गरबा, दीपावली, होली के अलावा विभिन्न प्रकार के खेलों, आयोजनों और राशियों के चित्र वाले माचिस बॉक्स देखने को मिलते हैं। इसी तरह आलोक के पास योगी-मोदी के साथ राजनीतिक दलों के चुनाव चिह्न वाली माचिस भी संग्रहित हैं।

80 देशों की एक लाख से ज्यादा माचिस का अनोखा संग्रह बनाने वाले आलोक मेहरोत्रा अब गिनीज बुक में दर्ज कराना चाहते नाम

प्रस्तुति: मनोज त्रिपाठी

लकड़ी पर कारीगरी का कमाल

बरेली के फर्नीचर की दुनिया में पहचान

बरेली शहर की पहचान बांस से है, इसीलिए इसे बांस बरेली भी कहते हैं। आज भी बांस-बेंत के अलावा शहर में लकड़ी का कारोबार बड़े पैमाने पर है। कहने को आज समय के साथ डिजाइन और काम के तरीके में बदलाव आया है, लेकिन 80 फीसदी कार्य हाथों से होने की वजह से बांस और लकड़ी से बने उत्पाद आज भी दुनियाभर में लोगों की पसंद बने हैं। इसका अनोखा डिजाइन, उच्च गुणवत्ता और किफायती कीमतें होने से यूपी के अलावा दिल्ली, उत्तराखंड, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात, कोलकाता, जयपुर, मुंबई समेत अन्य राज्यों में आज भी जबर्दस्त मांग है।

शहर में सिकलापुर में फर्नीचर की सबसे पुरानी और बड़ी मार्केट है। जिसे देश की सबसे बड़ी फर्नीचर मार्केट माना जाता है। यहां आज भी 70 से 80 साल पुरानी कई दुकानें है। करीब सौ वर्षों से यहां फर्नीचर का कारोबार हो रहा है। कुमार टॉकिज मार्केट और शहदाना मार्केट में भी फर्नीचर का काम बड़े पैमाने पर होता है। कई दशकों से इस कारोबार से जुड़े कारोबारी बताते हैं कि बरेली में लकड़ी का काम अंग्रेजी हुकूमत के समय से चला आ रहा है, इसलिए यहां के फर्नीचर की पहचान बड़े-बड़े शहरों में बनी है। दिल्ली, जयपुर, मुंबई और कोलकाता जैसे राज्यों के मुकाबले यहां फर्नीचर सस्ते हैं। 80 प्रतिशत डिजाइन कारीगर हाथ से तैयार करते हैं। ऐसे भी कारीगर हैं, जो 50 साल से इस काम को कर रहे हैं। सबसे खास बात यह है कि यहां के फर्नीचर में प्लाईवुड का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। जिस फर्नीचर को तैयार किया जाता है, उसमें एक ही तरह की लकड़ी लगाते हैं। मिक्स नहीं करते हैं। बरेली जनपद उतराखंड से सटा होने के कारण तराई क्षेत्र में आता है। यहां साल, सागौन और शीशम की लकड़ी उतराखंड से आती है।

सालाना 500 करोड़ का कारोबार, 15 हजार को मिल रहा रोजगार

सिकलापुर के अलावा सिविल लाइंस, कुमार टाकीज, पीलीभीत बाईपास, पुराना शहर, राजेंद्र नगर समेत कई स्थानों पर फर्नीचर के करीब 150 बड़े शोरूम हैं। जहां हर तरह की लकड़ियों से सामान तैयार किया जाता है। एक अनुमान के तौर पर यहां प्रतिवर्ष 500 करोड़ से ज्यादा का कारोबार होता है। वहीं, इस व्यवसाय से न सिर्फ एक परिवार की आजीविका चल रही है, बल्कि 15 हजार से अधिक लोग जुड़े हुए हैं। कई कारीगर ऐसे हैं जो सालों से एक ही फर्नीचर की दुकान में काम कर रहे हैं तो कुछ ने तो यहीं काम सीखकर खुद की छोटी दुकान भी खोल ली है।

प्रस्तुति: महिपाल गंगवार

शहर में बनने वाले फर्नीचर और उनकी खासियत

डाइनिंग टेबल : इसमें नक्काशी डिजाइन सबसे ज्यादा पसंद है। यह 20 साल से मार्केट में सबसे ज्यादा पसंद होने वाला डिजाइन है। इसमें भी हाथ की कारीगरी है। यह शीशम की लाल लकड़ी से बनती है।

सोफा सेट : यहां के नागफनी सोफा की सबसे अधिक डिमांड है। इसमें सभी कारीगरी हाथ से की जाती है। इसमें पूरी शीशम की लकड़ी लगी होती है।

डबल बेड : इसकी भी हाथ से कारीगरी की जाती है। यह पूरा लकड़ी का बना होता है, प्लाई का प्रयोग नहीं होता है। शीशम और सागौन की लकड़ी इसमें सबसे अधिक पसंद की जाती है।

ड्रेसिंग टेबिल : इसमें पसंद का डिजाइन बनाया जाता है। इसमें 35 से ज्यादा डिजाइन हैं। टेबल के अनुसार ही चेयर बनाई जाती है। यह सागौन की लकड़ी का अधिक बनता है।

आराम चेयर
यह गोल आकार में होती है। शीशम की बनती है। यह देखने में हल्की होती है, लेकिन एल आकार की चेयर के मुकाबले मजबूत होती है। इसमें बैठने में अधिक आराम मिलता है।

क्या कहते हैं फर्नीचर कारोबारी

यहां का वुड एंड फर्नीचर मार्केट बरेली देश का सबसे बड़ा मार्केट है। जहां सभी प्रकार का फर्नीचर खुद कारीगर तैयार करते हैं। मशीन का प्रयोग कम ही होता है। इसके बाद सहारनपुर और फिर दिल्ली के मार्केट का नाम आता है। यहां बड़े पैमाने पर छोटे कारीगर अपने घरों में भी फर्नीचर बनाने का काम करते हैं। बरेली के मार्केट में तैयार फर्नीचर यूपी के अलावा केरल, तमिलनाडु, चेन्नई समेत कई राज्यों में जाता है।

– रिंकू शर्मा, फर्नीचर कारोबारी, सिकलापुर

बरेली में फर्नीचर दिल्ली, मुंबई, चेन्नई समेत दूसरे राज्यों के मुकाबले काफी सस्ता हैं। कारण यह है कि कारीगर पुराने हैं और घर-घर लकड़ी का काम होता है। यहां के फर्नीचर में डबल बेड, सोफा सेट, राकिंग चेयर डाइनिंग टेबल मुख्य हैं। दो लाख रुपए तक का फर्नीचर भी मार्केट में मौजूद है। जैसा डिजाइन, वैसा ही पैसा है। यहां जो सामान दो लाख रुपए का है, दूसरे बड़े शहरों में वह पांच से छह लाख रुपए का हो जाता है।

–प्रदीप गोयल, अध्यक्ष, बरेली फर्नीचर डीलर एसोसिएशन

बरेली में सिकलापुर ही सबसे बड़ी फर्नीचर मंडी है। इसकी खास बात यहां कि कारीगरों खुद फर्नीचर तैयार करते हैं। मशीनों का प्रयोग कम ही किया जाता है। मार्केट ने दशकों बाद भी विश्वास नहीं खोया। यहां के मार्केट ने जो पहचान आजादी से पहले बनाई थी, वह आज तक कायम है। यहां पुरानी दुकानों और दरवाजों में जो डिजाइन मिलते हैं, वह कहीं नहीं तैयार होते। इसलिए शौकीन लोग दूसरे राज्यों से यहां फर्नीचर के लिए आते हैं।

– सुजीत जायसवाल, फर्नीचर कारोबारी, सिकलापुर

ब्रिटिश शासनकाल से बरेली में लकड़ी का काम चल रहा है। 1942 में दुकान शुरू की थी। हम तीसरी पीढ़ी है। यहां बने फर्नीचर की अपनी अलग पहचान है। उत्तराखंड के नजदीक होने की वजह से बरेली में साल, सागौन, शीशम की लकड़ी पर्याप्त मात्रा में मिलती है। महानगरों के मुकाबले बरेली का फर्नीचर सस्ता और टिकाऊ होता है। कीमत में करीब 40 फीसदी का फर्क होता है। 15 से 20 साल तक पॉलिस चमकदार बनी रहती है। इस वजह से इसकी अलग पहचान है।

–रवि, फर्नीचर कारोबारी, सिकलापुर